द्वारा

डॉ आशीष सिसोदिया

लोकगाथा - आभिजात्य समाज के संस्कार, संस्कृति तथा मनोरंजन के स्रोत से सर्वथा हटकर ’लोक‘ समान ने अपनी भावाभिव्यक्ति के लिए जिन साधनों का विकास किया है, उन श्रुत परंपराओं पर आधारित गेय स्रोतों में लोकगीत तथा लोकगाथाओं का शीर्ष स्थान है। ’लोकगाथा‘ संपूर्ण लोक साहित्य संसार की दृश्य-श्रव्य विधा है। संगीत की पृष्ठभूमि में दीर्घाकार कथा का गेय रूप ही लोकगाथा है। लोकगीतों का प्रबन्धात्मक स्वरूप ही ’लोकगाथा‘ है। अंग्रेजी में इस विधा के लिए ’बैलेड‘ शब्द का प्रयोग होता है। लोकगाथा एक ऐसी कथा है, जिसमें कथा के साथ-साथ गीत व वर्णनात्मकता है तथा जो मौखिक परंपरा से सीखी जाती है। इस नायक लोकप्रिय व्यक्ति होता है। अधिकांश लोकगाथाओं के भावधरातल पर वीर, शृंगार एवं करुण रस का त्रिवेणी संगम होता है। पाबूजी, बगड़ावत, तेजाजी, रामदेवजी, गोगाजी आदि लोकगाथाएँ इस दृष्टि से उल्लेखनीय हैं।

 लोकगाथा गेय विधा है। ये पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक परंपरा मंे जीवित रहती है। इनमें जन जीवन की झांकी होती है। राजस्थानी की लोकगाथाओं में यहाँ के धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक जीवन की विराट झांकियाँ देखने को मिलती है।

 राजस्थानी लोकगाथाओं का तात्विक विवेचन -

 (1) मंगलाचरण -

राजस्थान की प्रत्येक लोकगाथा में मंगलाचरण का विधान होता है। सर्वप्रथम गणेश वंदना होती है। तत्पश्चात् अन्य सभी पौराणिक एवं लोक-देवी देवताओं की स्तुति की जाती है। कुछ लोकगाथाओं में हिंदू देवी-देवताओं की स्तुति की जाती है।

 (2) सर्वगुण सम्पन्न नायक का चरित्र -

 लोकगाथा का नायक सर्वगुण सम्पन्न होता है। नायक जितना पराक्रमी, साहसी होता है, उतना ही दयालु, उदार एवं विनम्र भी होता है। वह अपनी हिम्मत से अत्याचारियों का सामना करता है और निर्धनों की सहायता भी करता है। ऐसे शूरवीरों में पाबूजी, तेजाजी, गोगाजी, पृथ्वीराज, बगड़ावत आदि के नाम लिए जा सकते हैं। लोकमानस ने इनकी उदात्त चारित्रिक विशेषताओं से प्रभावित होकर ही इन्हें गाथाओं का नायक पद प्रदान किया है।

 (3) इतिहास और कल्पना का सम्मिश्रण -

 लोकगाथाओं में ऐतिहासिक तत्व तो नाम मात्र के पाए जाते हैं किंतु उनमें कल्पना तत्व ही अधिक है। पाबूजी, गोगाजी, बगड़ावत, ढोलामारू आदि लोकगाथाओं के कथानक ऐतिहासिक हैं किंतु इनमें भी इतिहास तत्व नाममात्र का ही है। ’निहालदे-सुलतान‘ की लोकगाथा यद्यपि काल्पनिक है किंतु उसमें प्राचीन सांस्कृतिक परिवेश उभर कर आया है। इसी तरह जलाल-बबूना, नागजी-नागवंती आदि गाथाएँ भी पूर्णतः काल्पनिक हैं। लोकगाथा के गायकों के लिए इतिहास साध्य नहीं है, वह तो साधन है। उनका मुख्य लक्ष्य तो लोकमानस का मनोरंजन करना है।

 (4) वीर, शृंगार और करुण रस का संगम -

 अधिकांश लोकगाथाओं के भावधरातल पर वीर, शृंगार एवं करुण रस का त्रिवेणी संगम होता है। पाबूजी, बगड़ावत, गोगाजी, तेजाजी आदि लोकगाथाएँ इस दृष्टि से उल्लेखनीय हैं। इन लोकगाथाओं में नायक के शौर्य, पराक्रम के वर्णन के साथ-साथ शृंगार रस के संयोग-वियोग के दोनों पक्षों का भी चित्रण मिलता है। विरह प्रसंग तो अत्यंत ही स्वाभाविक, हृदयस्पर्शी एवं प्रभावोत्पादक है। कई लोकगाथाएँ दुखांत होने के कारण उनमें करुण रस का परिपाक हुआ है। पाबूजी, तेजाजी के लोकगाथाओं में करुण रस का परिपाक हुआ है।

 (5) युद्धों का सजीव वर्णन -

 राजस्थान की वीरतामूलक लोकगाथाओं में युद्धांे का का जीवंत वर्णन मिलता है। गाथानायक अपनी आन-बान-शान की रक्षा के लिए शत्रु से स्वयं युद्ध करता है। वह मैदान से पैर पीछे नहीं हटाता। शत्रु का डटकर सामना करता है, जिसमें या तो वह विजय प्राप्त करता है या फिर वीरगति को प्राप्त होता है। राजस्थान में ऐसे अनेक जुझार हुए हैं, जो सिर कट जाने पर भी तलवार चलाते रहते हैं।

 (6) वचनपालन की ’आन‘ -

 राजस्थान की लोकगाथाओं में प्रण पालन की परंपरा का बहुत महत्व है। लोकगाथा के नायक अपने प्राण देकर भी वचन पालन में पीछे नहीं हटते। चाहे बाबूजी हो या तेजाजी, या बगड़ावत सभी वचन के धनी हैं। नायक वचनों को पूरा करने के लिए अपने प्राण हँसते-हँसते न्यौछावर कर देते हैं। पाबूजी विवाह के तृतीय फेरे में ही उठकर प्रण पालन करने के लिए (गाँयों को बचाने के लिए ) चल पढ़ते हैं।

 (7) प्रेम की तीव्रता -

 राजस्थान में ऐसी लोकगाथाओं की सृष्टि हुई है जिनमें प्रेम की ज्योति प्रदीप्त होती है। नायक-नायिका के हृदय से प्रस्फुटित सरल, निश्छल, पावन प्रेम की किरणें जनमानस को भी प्रेम में निमज्जित कर देती है। प्रे्रम चाहे उभय पक्षीय हो चाहे एक पक्षीय, प्रेम तो प्रेम है। प्रेम का निर्वाह बहुत कठिन है। लोकलाज, मर्यादाएँ, बंधन आदि प्रेम-मार्ग में बाधाएँ हैं, जिनके कारण प्रेमियों का वियोग हो जाता है। अनेक प्रेमियों को तो अपने प्राणों का बलिदान भी देना पड़ता है किंतु इनके प्रेम में किंचित भी कमी नहीं आती। वियोग में तपकर उनका प्रेम कंुदन की भाँति निखर आता है। ’ढोलामारू‘ लोकगाथा की मारवणी तो गर्म भात खाने से भी डरती है ताकि कहीं उसके हृदय में बसे प्रिय जल न जाएँ।

 मारवणी, मालवणी एवं ढोला तीनों ही प्रेम की आग में जलते हैं किंतु तीनों के मिलन से गाथा सुखांत हो जाती है। किंतु अधिकांश गाथाएँ दुखांत हैं। इनमें जलाल-बबूना, सोरठ-बींझा, नागजी-नागवंती, जसमादे-ओडण आदि गाथाएँ दुखांत हैं।

 (9) गौरक्षा, शरणागत वत्सलता एवं दानशीलता -

 राजस्थान में ’गाय‘ को माता तुल्य मानकर आदर दिया जाता है। यहाँ के वीर माता, धरती और गाय की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व बलिदान कर देते हैं। तेजाजी एवं पाबूजी गायों की रक्षा हेतु शत्रु से युद्ध करते हैं और गायें छुड़ा लेते हैं। इतना ही नहीं एक काणा केरड़ा (बछड़ा) को छुड़ाने के लिए लौटते समय पाबूजी गंभीर रूप से घायल हो जाते हैं और वीरगति प्राप्त करते हैं।

 लोकगाथाओं में नायक शरणागतवत्सल होते हैं। शरण में आए हुए की रक्षा अपने प्राण देकर भी करते हैं। साथ ही दानशीलता यहाँ के नायकों की पहचान होती है। बगड़ावत जहाँ जाते हैं वहाँ मोहरें लुटाते जाते हैं। भोजा तो धौबा (अंजलि) भर-भर मोहरें लुटाता है। भोजा अपने घर से किसी को खाली हाथ नहीं भेजते थे। डूंगजी-जवारजी भी लूट का धन निर्धनों में बाँट देते हैं।

 (10) नैतिकता एवं भक्ति के सदुपदेश -

 राजस्थान धर्मपरायण प्रदेश है। यहाँ धार्मिक-भावना, सदाचरण एवं लोकहित को विशेष महत्व दिया गया है। राजस्थानी लोकगाथाओं में भक्ति एवं तपस्या के प्रभाव को भी व्यक्त किया गया है। इनके कारण असंभव कार्य भी संभव हो जाते हैं। भक्त सच्चे हृदय से नाम-स्मरण कर तथा सद्गुरु की कृपा से आत्मसम्मान प्राप्त करते हैं तथा जन्म-मरण के बंधन से मुक्त हो जाते हैं। भरथरी को ऐसे ही समर्थ गुरु गोरखनाथ मिल जाते हैं जो राजा के बाण से मृत मृग को पुनः जीवित कर देते हैं और भरथरी उसी समय उनके शिष्य बन जाते हैं। गोपीचंद भी माँ मैनावती की प्रेरणा से बारह वर्ष की उम्र में ही संन्यास ले लेते हैं। ’गोपीचंद‘ एवं ’भरथरी‘ की लोकगाथाओं में भग्यवान एवं कर्मफल को भी स्वीकार किया गया है। विधाता ने भाग्य में जो लिख दिया है, उसे कोई नहीं मिटा सकता।